Festivals of India
Holi -1
बैठकी होली
भाग 1

अवधि : 04.56
शब्द : 672

	वक्ता	
00.01	कैलाश चंद्र पांडे	बडे बूढों से जिनको मैंने 90 95 जो वर्ष के होलियारों से भी सुना है कि उन्होंने उनके पिताजी भी होली में जाते थे। तो कम से कम मैं समझता हूं कि 21वीं शताब्दी के शुरू में इसकी, बैठकी होली की एक नींव पड चुकी थी और शायद केन्द्र अलमोडा रहा होगा
00.31		गायन इस खाये रही, रही हो
00.46	निरंजन पंत	वैसे इसका विधिवत शुरूआत मानी जाती है वसन्त के दिन से और जिस दिन होली खेली जाती है उस दिन इसका समापन होता है और हरेक के घर में, चाहें किसी भी आर्थिक वर्ग का हो, अपने हिसाब से आतिथ्य वगैरह भी करते हैं लोगों का, और इट्स ए ओपन हाउस (It's a open house) इसमें की निमन्त्रण की

		आवश्यकता नहीं होती है किसी को। जहां होली की बैठक है, आप चले जाते हैं और बैठ जाते हैं, भांग भी लगा लेते हैं।
01.13	सामुहिक स्वर	गायन
01.22	डॉ. शेखर पाठक, संपादक, पहाड	रंग और संगीत के साथ होली की जो सबसे बडी विशेषता है कि इसकी जो सामूहिकता है। इसमें जो एक सर्व हिस्सेदारी है।
01.30	निरंजन पंत	कोई वर्ग भेद के बिना सब लोग एक साथ बैठते हैं और उस दिन तो कम से कम कोई बडा आदमी, छोटा आदमी का कोई भेदभाव नहीं होता है। और जो अच्छा गाता है उस दिन वो हीरो भी बन जाता है। और जो नहीं भी गाते हैं, तो एक हमारे यहां परम्परा है भाग लगाने की, तो वो उसमें अपना एक आध स्वर मिला देते हैं। थोडा बिगड जाये तो बाकी लोग संभाल लेते हैं उसको।
01.53	सामुहिक स्वर	गायन
02.02	कैलाश चंद्र पांडे	होली से सम्बन्धित राग हैं, उन रागों को, मुख्य रूप से उन रागों को लिया जाता है और एक बढिया चीज जो हमारे यहां, जो कुमाऊं में डवलप (develop) हुई कि उन रागों को एक सिलसिले से बांधा गया। बिल्कुल सिलसिले से, एक

		डिसिप्लेन (discipline) है कि आप ये राग उससे पहले नहीं गा सकते हैं। और मजे की बात ये है कि उसको सिलसिले में गाने में मूड भी बनता जाता है।
02.26		गायन हरी हाथन में पिचकारी रहत है री वाह वाह तो होरी खेलन कैसे जाऊं होली खेलन कैसे जाऊं
02.50	निरंजन पंत	बहुत ज्यादा अगर आप इसमें रागदारी दिखायेंगे तो बुरा माना जाता है। कोई आदमी अगर, गायक आये और अपनी रागदारी दिखाये तो वो माना जाता है कि ये स्थान नहीं है उसके लिये। ये लोक और उप शास्त्रीय संगीत का एक मिश्रण सा है। और कोई भी आदमी ज्यादा उठने की कोशिश करता है तो वो थोडा सा, मतलब, ये माना जाता है कि उसकी समवेतता बनाये रखना ज्यादा जरूरी है, अपनी बढाई दिखाना या अपनी एक्सीलेंस (excellence) दिखाना, गायकी का, वो स्थान आज नहीं है।
03.23	सामुहिक स्वर	गायन होरी खेलन कैसे जाऊं जाऊं, जाऊं, जाऊं,

		खेलन कैसे जाऊं
03.39	कैलाश चंद्र पांडे	बहुत सी होली में ऐसी चीजें हैं जो कि वाजिद अली शाह के दरबार में भी गाई जाती थीं। कुछ धमार हैं जो कि हम लोग गा रहे हैं और पुरानी चीजें, मथुरा की भी चीजें हैं और खानखाही चीजें भी बहुत सारी हैं। तो यानि की इसमें सब लोगों का योगदान रहा है।
03.57		गायन कुसुम रंग बोली क्या बात है कुसुम रंग बोली
04.06	चेतना जोशी	बहुत छोटेपन से देखा है, सुना है, मेरे जा दादा जी थे उनके घर में होली की बैठक होती थी। तो वो जो एक माहौल बनता था, होली की बैठक है फिर उसके बाद खाना पीना आ रहा है, लोग बहुत आनन्द उठा रहे हैं संगीत का।
04.23	कैलाश चंद्र पांडे	जैसा कि आप जानते हैं कि हमारे यहां संगीत में भी, कला में भी वर्षा श्रतु और ये वसन्त श्रतु का बहुत जबरदस्त प्रभाव है और वसन्त श्रतु में ये होली का मिलना तो एक कमाल ही है इसमें। कोशिश करते हैं कि वो रंग सब लोगों के दिल में छाये, लोगों को आनन्द दे।

04.41	सामूहिक स्वर	गायन जाउं री कैसे, जाऊं री खेलन कैसे जाऊं होली है होली है होली है